पञ्चमः पाठः

सौवर्णशकटिका

महाकवि शूद्रक-प्रणीत **मृच्छकटिक** प्रकरण तत्कालीन समाज का दर्पण माना जाता है। अपने दानशील स्वभाव के कारण धनहीन ब्राह्मण सार्थवाह आर्य चारुदत्त तथा उज्जयिनी नगर की गणिका वसन्तसेना की प्रणयकथा पर आधारित यह नाट्यकृति उस युग की अराजकता, समाज में व्याप्त कुरीति, द्यूतव्यसन, चौर्यवृत्ति, न्यायालय में व्याप्त पक्षपात तथा राजा के सगे-संबन्धियों के स्वैराचार का प्रामाणिक वृत्त प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत नाट्यांश **मृच्छकटिक** के छठे अंक से लिया गया है। इसमें शिशु मन को उद्वेलित करने वाली बालसुलभ इच्छा को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। धनी मानी पड़ोसी बच्चे की सोने की गाड़ी देख, धनहीन चारुदत्त का बेटा रोहसेन अशांत हो उठता है। दासी रदनिका उसे फुसलाने का प्रयत्न करती है - मिट्टी की गाड़ी देकर। परन्तु भोला शिशु अपनी जिद पर अड़ा रहता है। रदनिका उसे वसन्तसेना के पास ले जाती है। बच्चे का परिचय तथा उसके रोने का कारण जानकर वात्सल्यमयी वसन्तसेना अपने सारे आभूषण बच्चे को सौंप देती है और कहती है - इनसे तुम भी सोने की गाड़ी बनवा लेना।

इस प्रकार, प्रस्तुत नाट्यांश शिशुओं के निर्मल अन्तःकरण तथा स्नेहशीला नारी की वत्सलता को प्रकाशित करता है।

(*ततः प्रविशति दारकं गृहीत्वा रदनिका*)

रदनिका - **एहि वत्स! शकटिकया क्रीडावः।**

दारकः - (*सकरुणम्*)
रदनिके! किम्मम एतया मृत्तिकाशकटिकया? तामेव सौवर्णशकटिकां देहि।

रदनिका - (*सनिर्वेदं निःश्वस्य*)
जात! कुतोऽस्माकं सुवर्णव्यवहारः? तातस्य पुनरपि ऋद्ध्या सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि। (*स्वगतम्*) तद्यावद् विनोदयाम्येनम्। आर्याया वसन्तसेनायाः समीपमुपसर्पिष्यामि। (*उपसृत्य*) आर्ये! प्रणमामि।

वसन्तसेना - रदनिके! स्वागतं ते। कस्य पुनरयं दारकः? अनलङ्कृत-शरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

रदनिका - एष खलु आर्यचारुदत्तस्य पुत्रो रोहसेनो नाम।

वसन्तसेना - (*बाहू प्रसार्य*)
एहि मे पुत्रक! आलिङ्ग।
(*इत्यङ्के उपवेश्य*)
अनुकृतमनेन पितुः रूपम्।

रदनिका - न केवलं रूपं, शीलमपि तर्कयामि। एतेन आर्यचारुदत्त आत्मानं विनोदयति।

वसन्तसेना - अथ किन्निमित्तमेष रोदिति?

रदनिका - एतेन प्रातिवेशिकगृहपतिदारकस्य सुवर्णशकटिकया क्रीडितम्। तेन च सा नीता। ततः पुनस्तां मार्गयतो मयेयं मृत्तिकाशकटिका कृत्वा दत्ता। ततो भणति रदनिके! किम्मम एतया मृत्तिकाशकटिकया? तामेव सौवर्णशकटिकां देहि इति।

वसन्तसेना - हा धिक् हा धिक्! अयमपि नाम परसम्पत्त्या सन्तप्यते? भगवन् कृतान्त। पुष्करपत्रपतित-जलबिन्दुसदृशैः क्रीडसि त्वं पुरुषभागधेयैः। (*इति सास्रा*)। जात! मा रुदिहि! सौवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि।

दारकः - रदनिके! का एषा?

रदनिका - जात! आर्या ते जननी भवति।

दारकः - रदनिके! अलीकं त्वं भणसि। यद्यस्माकमार्या जननी तत् केन अलङ्कृता?

वसन्तसेना - जात! मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि।

		(नाट्येन आभरणान्यवतार्य रोदिति)
		एषा इदानीं ते जननी संवृत्ता। तद् गृहाणैतमलङ्-कारकम्,
		सौवर्णशकटिकां घटय।
दारकः	-	**अपेहि, न ग्रहीष्यामि। रोदिषि त्वम्।**
वसन्तसेना	-	*(अश्रूणि प्रमृज्य)*
		जात! न रोदिष्यामि। गच्छ, क्रीड।
		(अलङ्कारैर्मृच्छकटिकां पूरयित्वा)
		जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्।
		(इति दारकमादाय निष्क्रान्ता रदनिका)

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

दारकम्	-	बालकम्, पुत्रकम्, बच्चे को।
शकटिकया	-	वाहनविशेषेण, गाड़ी के द्वारा।
मृत्तिकाशकटिकया	-	मृत्तिकानिर्मितया गन्त्र्या, मिट्टी की गाड़ी से।
सौवर्णशकटिकाम्	-	सुवर्णनिर्मितां गन्त्रीम्, सोने की गाड़ी को।
सुवर्णव्यवहारः	-	स्वर्णस्य आदानं प्रदानम्, सोने की लेन-देन।
विनोदयामि	-	अनुरञ्जयामि, बहलाती हूँ।
उपसर्पिष्यामि	-	पार्श्वमुपगमिष्यामि, पास पहुँचती हूँ।
किन्निमित्तम्	-	किमर्थम्, किस लिये, किस बात के लिये।
प्रातिवेशिकः	-	प्रतिवेशे निकटे स्थितः, पड़ोस में रहने वाला।
मार्गयतः	-	अन्विष्यतः, खोजने वाले का।
परसम्पत्त्या	-	अन्यस्य समृद्ध्या, पराई समृद्धि से।
सन्तप्यते	-	दुःखमनुभवति, सन्तप्त हो रहा है।
पुष्करपत्रम्	-	कमलपत्रम्, कमल का पत्ता।
पुरुषभागधेयैः	-	मनुष्यस्य भाग्यैः, मनुष्य के भाग्य के साथ।
अलीकम्	-	असत्यम्, झूठ।
अलङ्कृता	-	विभूषिता, आभूषण पहने हुई।
मुग्धेन मुखेन	-	कोमलेन (निर्दोषेण) मुखेन, भोले मुख से।

आभरणानि	–	आभूषणानि, गहनों को।
घटय	–	निर्मापय, बनवा लो।
अपेहि	–	दूरीभव, दूर हटो।
प्रमृज्य	–	सारयित्वा, पोंछ कर।
निष्क्रान्ता	–	बहिर्गता, बाहर निकल गई।

अभ्यासः

1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्

(क) मृच्छकटिकम् इति नाटकस्य रचयिता कः?
(ख) दारकः (रोहसेनः) रदनिकां किमयाचत?
(ग) वसन्तसेना दारकस्य विषये किं पृच्छति?
(घ) रदनिका किमुक्त्वा दारकं तोषितवती?
(ङ) रोहसेनः कस्य पुत्रः आसीत्?
(च) आर्यचारुदत्तः केन आत्मानं विनोदयति?
(छ) रोहसेनः कीदृशीं शकटिकां याचते?
(ज) वसन्तसेना कैः मृच्छकटिकां पूरयति?
(झ) रोहसेनेन स्वपितुः किम् अनुकृतम्?
(ञ) वसन्तसेना किमुक्त्वा दारकं सान्त्वयामास?

2. हिन्दीभाषया व्याख्यां लिखत

(क) अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।
(ख) न केवलं रूपं शीलमपि तर्कयामि।
(ग) पुष्करपत्रपतितजलबिन्दुसदृशैः क्रीडसि त्वं पुरुषभागधेयैः।
(घ) जात! मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि।

3. अधोलिखितानां पदानां स्वसंस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत

मृत्तिकाशकटिकया, सुवर्णव्यवहारः, अश्रूणि, विनोदयति, प्रातिवेशिकः ऋद्ध्या, रोदिति।

4. अधोलिखतानां क्रियापदानि वीक्ष्य समुचितं कर्तृपदं लिखत

(क) .... क्रीडावः।
(ख) .... विनोदयामि।
(ग) .... सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि।

(घ) .... अलीकं भणसि।
(ङ) किं निमित्तम् .... रोदिति।

5. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कुरुत

(क) कुतोऽस्माकम् = ...
(ख) पुनरपि = ...
(ग) किन्निमित्तम् = ...
(घ) पुनस्ताम् = ...
(ङ) यद्यस्माकम् = ...
(च) आभरणान्यवतार्य = ...

6. निर्दिष्टप्रकृतिप्रत्ययनिर्मितं पदं लिखत

(क) निः + श्वस् + ल्यप् = ...
(ख) अनु + कृ + क्त = ...
(ग) अलम् + कृ + क्त + टाप् = ...
(घ) अव + तृ + णिच् + ल्यप् = ...
(ङ) पूर् + क्त्वा = ...
(च) आ + दा + ल्यप् = ...
(छ) ग्रह् + क्त्वा = ...
(ज) उप + सृ + ल्यप् = ...
(झ) क्रीड् + क्त = ...
(ञ) प्र + मृज् + ल्यप् = ...

7. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि लिखत

(क) सौवर्णशकटिका = ...
(ख) अलीकम् = ...
(ग) अलङ्कृता = ...
(घ) निष्क्रान्ता = ...
(ङ) अपेहि = ...
(च) परसम्पत्त्या = ...

8. अधोलिखितानां पदानां पर्यायवाचिपदानि लिखत

दारकः, पितुः, तर्कयामि, जननी, नीता, भणति, अलीकम्।

9. अधोलिखिताः पङ्क्तयः केन कं प्रति उक्ताः

(क) एहि वत्स! शकटिकया क्रीडावः।
(ख) आर्यायाः वसन्तसेनायाः समीपम् उपसर्पिष्यामि।
(ग) एहि मे पुत्रक! आलिङ्ग।
(घ) किं निमित्तं एष रोदिति।
(ङ) रदनिके! का एषा।
(च) जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्।

10. पाठम् आश्रित्य सोदाहरणं वसन्तसेनायाः रोहसेनस्य च चारित्रिकवैशिष्ट्यम् हिन्दीभाषायां लिखत

योग्यताविस्तारः

सौवर्णशकटिका इति पाठस्य साभिनयं नाट्यप्रयोगं कुरुत